विचार बिन्दु

चिंता से चित्त को संताप और आत्मा को दुर्बलता प्राप्त होती है, इसलिए चिंता को तो छोड़ ही देना चाहिए। –ऋग्वेद

गंगा-जमुनी तहज़ीब में असम्मान, अपमान, अवमानना और उपेक्षा की पराकाष्ठा

गंगा-जमुनी तहज़ीब की दुहाई हर नेता देता है, विशेष रूप से वे तो इसकी माला ही जपते हैं जो धर्म निरपेक्ष देश की दुहाई देते रहते हैं। क्या आज वे ही नफ़रत के बम विस्फोट नहीं कर रहे हैं। धर्म तो छोड़िये जाति, वर्ग, वर्ण और संप्रदाय के अति संकीर्ण दृष्टिकोण के साथ विभाजन व अलगाव वाद के बीज बो रहे हैं और इस आधार पर वोटों की फसल काट कर सत्ता सुख भोगना चाहते हैं। निश्चय ही विपक्ष इस प्रतियोगिता में आगे है, उसका पलड़ा भारी है अपशब्द कहने में। दशरथ ने तो राम को प्रत्यक्षतः वनवास हेतु कहा भी नहीं था। कैकेयी के कहने मात्र से राम ने अपने पिता दशरथ की आज्ञा मानकर सहर्ष चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार किया।

सत्ता लोलुपता के कारण राजनीति में जो घोर पतन हुआ है, वह घोर भर्त्सना व निंदा योग्य है। लोगों को यह भी स्पष्ट है कि इसकी शुरूआत मोदी शासन के बाद ज़ोर-शोर से हुई है। इसका विश्लेषण भी नयूज़ चेनल ही नहीं हर समझदार व्यक्ति कर रहा है। सर्वप्रथम कारण तो यही है कि मोदी की सरकार का केन्द्र में पूर्ण बहुमत विपक्ष को पच नहीं रहा। सत्ता परिवर्तन पहले भी हुए हैं परंतु किसी राष्ट्रवादी दल का पूर्ण बहुमत पहली बार हुआ है। इसका आशय यह भी नहीं है कि अन्य सत्ताएँ देश के लिये कुछ नहीं कर रही थीं परंतु यह अवश्य कहा जा सकता है कि उनकी रीति-नीति में तुष्टीकरण और परिवारवाद को प्रधानता रही। यह भी सर्वविदित है कि जिस एक राष्ट्रीयदल का वर्चस्व सारे भारत में था वह धीरे-धीरे सत्ता के मोह में कई दुर्बलताओं से ग्रसित हो गया। इन दुर्बलताओं के परिणामस्वरूप इसी दल से कई छोटे-छोटे दल बनते चले गये। सेवा व त्याग के बजाय जब स्वार्थ और परिवारवाद हावी होने लगा तो कई नेताओं की या तो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ जगीं अथवा सैद्धांतिक मतभेद हो गये। भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की बात स्वीकारने से क्षैत्रीय दलों का जन्म हुआ। यह प्रक्रिया दक्षिण भारत में तेज़ रही और आंशिक रूप से उत्तर भारत में भी। प्राचीनतम राष्ट्रीय दल काँग्रेस से ही निकले एक राजनीतिक दल ने अपनी सत्ता लोलुपता में जातिगत आरक्षण प्रारंभ करके भारत की अखण्डता पर सबसे बड़ा प्रहार किया। सारे देश में जातिवाद आधारित राजनीति को सबसे अधिक बढ़ावा दिया। प्रत्येक जाति, वर्ग, वर्ण एवं संप्रदाय के लोगों ने आरक्षण की मांग प्रारंभ कर दी। जातिगत राजनीति ने एक-दूसरे दल व उसके नेता को अपमानित कर वोट बैंक की कोशिश की। देश की स्वतंत्रता के बाद ही नहीं पूर्व से ही अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की रीति-नीति ने एक राष्ट्रवादी संगठन को बढ़ावा दिया। यह संगठन विशेष रूप से अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के पक्ष में नहीं रहा। राष्ट्रहित पहले देखना, सभी नागरिकों के साथ पक्षपात विहीन रहना, अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के बजाय सर्व जनहिताय, सर्व जन सुखाय का पक्षधर रही। निश्चय ही बहुसंख्यकों को यह न्यायसंगत लगा और वे इसके पोषक राजनीतिक दल की ओर आकर्षित होकर इसे धीरे-धीरे प्रोत्साहन देने लगे और अंततोगत्वा उसे बहुमत में लाकर पहले कई राज्यों में और बाद में केन्द्रीय सत्ता में प्रतिष्ठित किया। क्षैत्रीय दलों और जातिगत राजनीति आधारित दलों ने अपनी ज़मीन खिसकते देख अल्पसंख्यक तुष्टीकरण व जाति व क्षैत्रीय तुष्टीकरण पर और अधिक बल दिया। एक तरफ राष्ट्रवाद और दूसरी ओर तुष्टीकरण के टकराव ने धीरे-धीरे राजनीति में कटुता, अस्भ्यता व अपमान की प्रवृत्ति को जन्म दिया। एक परिपक्व दलीय व राष्ट्रीय नेता के अभाव ने भी राष्ट्रवाद समर्थक राजनीतिक दल को प्राथमिकता दी। नेताओं की अपरिपक्वता, शीर्ष नेता के निजी स्वार्थ व परिवारवाद ने भी राजनीति में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य उत्पन्न किया।

भारत का प्रधानमंत्री देश में पूर्ण बहुमत से निर्वाचित इस देश का शीर्ष प्रतिनिधि है, उसका अपमान सारे देश का अपमान है और इससे अनुशासन हीनता का ही संदेश जनता को जाता है। देश की जनता को निश्चय ही अनुशासन हीनता रास नहीं आती और यह कहना सही होगा कि इससे प्रधानमंत्री के प्रति और अधिक सहानुभूति और विपक्ष के प्रति वितृष्णा का भाव जागृत होता है।

भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ नेतृत्व की महत्वाकांक्षा रखने वाले तथा मात्र परिवारवाद के आधार पर पले-पोसे नेताओं के राजनीति के पटल पर यकायक प्राकट्य से भी ईर्ष्या-द्वेष बढ़ने लगा। भारतीय संस्कृति व सभ्यता में बड़ों के सम्मान पर सदैव बल रहा है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, डॉ.राधा कृष्णन जैसे राष्ट्रपति और नेहरू, पटेल, इंदिरा जी व अटलजी के जमाने तक यह परम्परा निभती रही। विरोधी दल के प्रति व विपक्षी नेता के प्रति विचार प्रकट करने का भी एक सभ्य तरीका था। पं.नेहरू ने अटल जी को भविष्य का प्रधानमंत्री बताया था। अटलजी के प्रति सत्ता पक्ष कहता था कि वे अच्छे व्यक्ति हैं परंतु उनका दल अच्छा नहीं है। अटल जी का भी सभ्य उत्तर ाा कि वे अच्छे हैं तो उनका दल खराब कैसे हो सकता है। बाँग्लादेश के अस्तित्व में आने पर अटलजी ने इन्दिरा जी को दुर्गा की संज्ञा दी थी। यह सब उस समय की घटनाएँ हैं जब नेताओं का कुछ सिद्धांत था, कुछ आदर्श था, उनमें कुछ नैतिकता थी, दलीय प्रतिबद्धता थी। बाद में तो आयाराम, गयाराम की राजनीति प्रारंभ हो गई। मंत्रिमण्डल सहित दल बदलने का उदाहरण हरियाणा ने पेश किया। बाद में तो रामविलास पासवान और नीतिश कुमार जैसे नेता आये दिन नये-नये गठबंधन करने लगे। क्षैत्रीयवाद व जातिवाद आधारित दलों में भी हर जगह पक्ष-प्रतिपक्ष बन गये और एक-दूसरे पर अपशब्दों का प्रयोग करने लगे। मायावती व मुलायमसिंह के बीच के संवाद अपशब्दों के प्रयोग के प्रारंभिक उदाहरण हैं। यही स्थिति प्रत्येक क्षैत्रीय दल की हो गई। राजनीति प्रदूषित तो पहले ही थी, राष्ट्रवादी दल के केन्द्रीय सत्ता में पूर्ण बहुमत के साथ आने पर क्षैत्रीय व जाति आधारित दलों को अपना अस्तित्व खतरे में लगने लगा और अपनी दुर्बलता को और अधिक अल्पसंख्यक तुष्टीकरण और अपशब्दों के प्रयोग में प्रकट करने लगे। अपशब्दों का प्रयोग कायरता और दुर्बलता का परिचायक है। मेवाड़ी में एक कहावत है, जिसका आशय यह है कि हारा हुआ 'पशु' विचित्र हाव भाव करता है। कायर 'वचन वीर' होता है, शब्दों के बाणों को ही अपनी वीरता मानता है।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता, गुरु व सभी बड़ों का आदर निहित है। उसी प्रकार अपने से छोटों के प्रति स्नेह-प्रेम दिखाना भी आवश्यक है। प्रधानमंत्री ने जब विपक्ष की एक नेत्री के प्रति यह कहा कि वे उनकी पुत्री की तरह हैं तो उन्होंने कहा कि वे अपने पिता को ही पिता मानती हैं और किसी को नहीं। यह उनकी संकीर्ण सोच ही कही जायेगी। गुजरात के मुख्यमंत्री को मौत का सौदागर कहना और उनके लिये अन्य देश को वीसा न देने के लिये लिखना ओछी राजनीति ही कही जायगी। प्रधानमंत्री को 'चौकीदार' के बजाय 'चोर' कहना क्या परिपक्व राजनीति का घोतक है? पश्चिमी बंगाल की एक नेता ने कहा कि वे प्रधानमंत्री को कंकड़ के लड्डू भेजेंगी, जबकि प्रधानमंत्री ने मात्र यह कहा था कि वे उन्हें उपहार भी भेजती हैं।

निश्चय ही एक नेता ने अपने शीर्ष नेतृत्व की चापलूसी में प्रधानमंत्री को 'नीच' कहा है, वह व्यक्ति केन्द्रीय सत्ता में विदेश विभाग में उच्चाधिकारी रह चुके हैं। हाल ही में विपक्ष के शीर्ष नेता ने राष्ट्रपत्नी कह कर और दूसरे नेता ने प्रधानमंत्री के पिता का नाम ही बदल कर जो अपराध किया वह अक्षम्य है। लेखक की जानकारी में एक ऐसा प्रसंग है जिसमें पिता ने अपने पुत्र की कपूती के कारण न्यायालय में दावा किया कि उसके पुत्र को पिता के रूप में उनका नाम न लिखने हेतु पाबंद किया जाय परंतु ऐसा कभी नहीं सुना कि पिता का नाम ही बदल दिया जाय। यह नेतृत्व के पतन की पराकाष्ठा है और सारा देश इसकी भर्त्सना ही करेगा। प्रधानमंत्री के लिये 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' के नारे घोर असभ्यता, अशिष्टता व अज्ञानता के प्रतीक हैं, दुर्बलता व कायरता के प्रतीक हैं। प्रधानमंत्री को 'औकात' दिखाने की बात कहना 'कुशिक्षा' है।

केन्द्रीय सत्ता पक्ष के व्यक्तियों के उदाहरण पर भी गलत होने का विचार आवश्यक है। एक नेता ने कहा कि जिन्हें पाकिस्तान से प्यार है तो वे पाकिस्तान चले जायें, शायद दोषपूर्ण नहीं है, परंतु पन्द्रह मिनट के लिये पुलिस व मिलिटरी को हटाने पर बहुसंख्यकों को 'साफ' करने की एक अल्पसंख्यक नेता का बयान निश्चय ही अत्यंत भड़काऊ और आपत्तिजनक है।

भारत का प्रधानमंत्री देश में पूर्ण बहुमत से निर्वाचित इस देश का शीर्ष प्रतिनिधि है, उसका अपमान सारे देश का अपमान है और इससे अनुशासन हीनता का ही संदेश जनता को जाता है। देश की जनता को निश्चय ही अनुशासन हीनता रास नहीं आती और यह कहना सही होगा कि इससे प्रधानमंत्री के प्रति और अधिक सहानुभूति और विपक्ष के प्रति वितृष्णा का भाव जागृत होता है।

'विद्या ददाति विनकेव' विनय ददाति पात्रता' ऐसा हमारे शास्त्र कहते हैं। शिक्षा संस्कार देती है। इस दृष्टि से बड़ों को अपशब्द कहने वाले नेता, कुसंस्कारी हैं और नेतृत्व के पात्र नहीं हैं। केन्द्रीय सत्तापक्ष के नेताओं ने व्यंग्यात्मक अथवा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति की है। प्रधानमंत्री का बयान था कि जो लोग कीचड़ उछाल रहे हैं उसमें कमल खिलेगा। उसी तरह एक शीर्ष विपक्षी नेता का जो नाम 'गूगल' पर भी उनका पर्याय बन गया है वह उनके बचकानेपन और अपरिपक्वता का परिचायक है।

एक और पक्ष है देश की अखण्डता व उसके संघीय स्वरूप को चोट पहुँचाने का। केन्द्र के अधिकृत आदेशों की उपेक्षा, अवमानना व अवहेलना करना, रीति-नीति लागू न करना संघीय ढाँचे के विपरीत है। उसी प्रकार प्रधानमंत्री के किसी राज्य में आगमन पर उनकी उपेक्षा व अपमान भी अत्यंत अनुचित है। अपशब्द कहने वाले, बड़ों को उपेक्षित व अपमानित करने वाले नेता कभी भी न अच्छे नेता बन सकेंगे और न ही लोकप्रिय। इस देश ने ऐसे नेताओं का अस्थायी उत्थान देखा है, परंतु उनका अतंतोगत्वा पतन भी अवश्यंभावी है इसे स्मरण रखना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

नीर साफ और शुद्ध हवा थी, इक दिन ऐसी दुनिया थी

डॉ. रामावतार शर्मा

पिछले कई महीनों से जयपुर सहित अन्य कई शहरों में एक अलग तरह का रोग फैल रहा है जिसमें प्रारंभिक बुखार के बाद अनियंत्रित खांसी का एक लंबा दौर चलने लगता है। खांसी भी ऐसी जिसको समाप्त करने या कम करने के हर चिकित्सकीय उपाय निरर्थक सिद्ध हो रहे हैं।

इस खांसी के अलावा और इसके फलस्वरूप शरीर में अत्यधिक थकान और कमजोरी रोगी को बेहद लाचार कर देती है। इसके अलावा इस रोग से घर का करीब-करीब हर सदस्य पीड़ित होता हैद्व जिससे पूरे परिवार का जीवन अल्पावधि के लिए अस्त-व्यस्त हो जाता है। इस तरह की बीमारी इतने व्यापक स्तर पर पिछले कई दशकों में नहीं देखी गई। व्यक्तिगत अनुभव के अनुसार कह सकता हूं कि शायद पहली बार ही ऐसी मुसीबत सामने आई है। अनुभव यह भी बता रहा है कि खांसी की दवाएं जितना कारगर पहले हुआ करती थी उतनी प्रभावशाली अब नहीं रह गई हैं।

क्या ये बातें हमें वैसा कुछ सोचने को नहीं उकसाती हैं जहां इस परिवर्तन के कारणों का मोटे तौर पर अध्ययन किया जाए और फिर गहन अध्ययन के प्रयास किए जाएं? क्या हमारे यहां की सरकारें और जनता का कोई प्रभावशाली वर्ग वायु प्रदूषण को ले कर संवेदनशील है?

रात-दिन धर्मयुद्ध में व्यस्त हमारे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया चैनल्स क्या कभी इस बात को प्रमुखता से प्रचारित करते हैं कि कोलकाता विश्व का प्रथम नंबर का शहर है जहां 2.5 कण तत्वों द्वारा सर्वाधिक मौतें होती हैं?

भारत सरकार ने कुछ प्रयत्न किए हैं जो खानापूर्ति जैसे लगते हैं क्योंकि इन कदमों के पीछे दृढ़ संकल्प की कमी स्पष्ट नजर आती है वरना दुनिया के सर्वाधिक वायु प्रदूषित 20 शहरों में से 18 शहर भारत के न होते। केंद्र सरकार ने 2017 को आधार मानते हुए 2024 तक तत्व कणों को 20-30 प्रतिशत और फिर 2025-26 तक 40 प्रतिशत तक कम करने का उद्देश्य सामने रखा है। यह शुरुआत प्रथम दृष्टि में तो अच्छी लगती है पर थोड़ा सा अध्ययन करने से निराशा हाथ लगती है। तत्व कण वाहनों के धुएं, घास फूस और लकड़ियों के जलाने, टूटी फूटी सड़कों से उठती मिट्टी, पत्थरों की पिसाई और निर्माण कार्यों द्वारा वातावरण में फैलते हैं। इनमें 2.5 साइज के तत्व कण सबसे खतरनाक होते हैं। सरकार ने अपने वर्तमान उद्देश्य में इन कणों को शामिल नहीं किया है जो कि एक निराशाजनक बात है क्योंकि 2.5 तत्व कण ही भारत का सबसे बड़ी स्वास्थ्य संबंधी खतरा है। सरकार ने 10 और उनसे बड़े तत्व कणों को शामिल किया है।

यहां जनता भी कम दोषी नहीं है। शाम के समय शहरों के मुख्य मार्गों पर लोग ठेलों का खाना कारों में बैठ कर खाते हैं। स्थिर अवस्था में चलता हुआ एयर कंडीशनर जबरदस्त स्थानीय वायु प्रदूषण फैलाता है। इसके अलावा लोगों के शरीर में इतनी ताकत भी नहीं बची है कि वे अपने निवास से 200 - 300 मीटर दूर से घरेलू सामान उठा कर ले आएं। इन छोटी दूरियों पर जब वाहन चलते हैं तो 2.5 तत्व कण काफी बड़ी मात्रा में हर तरफ फैलते हैं और लोगों के फेफड़ों को काफी नुकसान पहुंचाते हैं। चूंकि इन कणों के कारण फेफड़े दीर्घकालीन प्रज्वलन (क्रोनिक इन्फ्लेमेशन) की स्थिति में रहते हैं तो उनमें वायरस का संचारण आसानी से होता है और खांसी के हमले व्यक्ति को बेदम कर देते हैं।

भारत में तेजी से शहरीकरण हो रहा है, जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है जिसके कारण कूड़ा कचरा तेजी से बढ़ रहा है। स्वच्छ भारत का चुनावी नारा अपनी भ्रूणावस्था में ही मर गया। अब तो सरकार इस बहाने हर महीने वसूली तो कर लेती है पर गंदगी हर गली-मोहल्ले में अपने साम्राज्य को विस्तृत करती नजर आ रही है। अब इस कूड़े-कचरे पर शहरी वाहन दौड़ते हैं और पूरे वातावरण में 2.5 तत्व कण फैल जाते हैं, फेफड़ों में घुस कर वहां सूजन पैदा करते हैं जिससे वायरस क्रियाशील हो जाते है। इस प्रक्रिया की परणिति जबरदस्त खांसी में होती है जिसके सामने चिकित्सा विज्ञान के हर साधन पराजित होते हैं। परिवार के परिवार कई सप्ताह तक खांसते रहते हैं जिनमें कई लोगो की तो हालत काफी खराब हो जाती है।

जहां तक सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का सवाल है तो वहां तो परंपरागत धन कमाने की लालसा ही नजर आती है। सरकार में बैठे लोग सिर्फ सजा देना जानते हैं इसलिए यदि किसी वाहन चालक के पास प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र नहीं है तो दस हजार का जुर्माना लगा दिया जिसे ट्रैफिक पुलिस का सिपाही तीन से पांच हजार रिश्वत लेकर एक बड़े भ्रष्टाचार को खुलमखुल्ला जन्म दे रहा है। प्रदूषण फैलता है ट्रैफिक जाम से, टूटी-फूटी सड़क की मिट्टी से, सड़क किनारे बिखरे कचरे से, पेट्रोल-डीजल की मिलावट जैसे कारणों से, पर इन सब मामलों से निपटने में सरकारी उदासीनता सर्वविदित है। प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र भरी दुपहरी की लूट से अधिक कुछ नहीं है।

भारत को अपने विकास के मॉडल को बदलना होगा। गांव और कस्बों पर जन जागरण द्वारा परिवर्तन करने का प्रयास करना होगा ताकि लोग वहां पर रोजगार विकसित करें तथा आम रास्तों पर कब्जा करने की मनोवृति छोड़ें। आप कभी चूरू जैसे शहरों में जाइए। बेतरतीब भागते-दौड़ते, धुंआ उगलते, शोर मचाते ऑटो आपकी सांस रोकते और कान फोड़ते दानव से लगते हैं। गोबर और बच्चों के मल से सड़कें भरी हुई हैं और कोने-कोने से पेशाब की बदबू आती है। हर तरफ प्लास्टिक बिखरा हुआ है, दुकानदारों ने एक तिहाई सड़क पर कब्जा जमा रखा है और मतवाले मटकते तथाकथित नौजवान कान पर मोबाइल लिए सड़क के बीच से हटने का नाम नहीं लेते हैं। जो वाहन चालक इन शहरों में शांति से गाड़ी चला लेता है वह हो सच्चा ध्यानी कहलाने का हकदार है, हिमालय की शांत गुफा में बैठा ध्यान योगी इस चालक के सामने एक बालक मात्र है।

शहरों में छोटे-छोटे जंगलों का निर्माण अब आबादी के घनत्व के कारण असंभव हो गया है। शहरी वन वाटिकाओं के बिना शुद्ध वायु महज एक सपना है। भारत के शहरों और कस्बों के नागरिकों की नीयति खराब गले के साथ खांसते रहने की है और लगता तो यह है कि लोग खांसते रहेंगे, बेदम होते रहेंगे क्योंकि हमने उस संसार को नष्ट कर दिया जिसमें पानी साफ और हवा शुद्ध हुआ करती थी।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

बाबा श्याम के वार्षिक लक्खी मेले में लाखों की तादात में उमड़ रहे भक्त

खाटूश्यामजी, (निसं)। हारे के सहारे बाबा श्याम का वार्षिक लक्खी मेला अपने शिखर पर पहुंचा रहा है। देश की चारों दिशाओं से श्याम भक्त बाबा श्याम के दर्शन करने के लिए खाटू नगरी में पहुंच रहे हैं। रींगस रोड पर श्याम भक्तों की कतार लगातार बनी हुई है। बाबा श्याम के लक्खी मेले में बुधवार सुबह से भीड़ बढ़ने की वजह से प्रशासन ने दर्शन मार्ग का रास्ता परिवर्तित करते हुए बाबा श्याम के दर्शन के लिए भेजा गया। बाबा श्याम के वार्षिक लक्खी मेले में इस बार श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा की गई व्यवस्थाओं से लाखों श्याम भक्तों को कम समय में दर्शन लाभ हो रहे हैं।

- **देश के कोने-कोने से श्याम भक्त खाटू नगरी पहुंच रहे हैं**
- **बाबा श्याम नगर भ्रमण को कल निकलेंगे**

रींगस से खाटू मांर्ग पर हर जगह पर श्याम भक्त ध्वजा लेकर चलते हुये नजर आ रहे हैं।

बाबा श्याम के नगरी से जुड़ने वाले हर मार्ग पर बाबा श्याम के भक्तों के हुजूम उमड़ रहा है। बाबा श्याम के दीवाने बाबा के जयकारे लगाते हुए श्याम बाबा के अलौकिक श्रंगार के दर्शन कर खुशहाली की कामना कर रहे हैं। हाथों में रंग बिरंगी निशान लेकर श्याम बाबा के जयकारे लगाते हुए श्याम भक्त अपने आराध्य के दर्शन करने के लिए खाटूश्यामजी पहुंच रहे हैं।

कल निकलेंगे बाबा श्याम नगर भ्रमण को: बाबा श्याम अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए अपनी हवेली से एकादशी शुक्रवार को नगर भ्रमण करेंगे। नीले घोड़े पर बनड़ा सा बनकर बाबा श्याम की शाही सवारी जिसमें बैंड, ढोल, तरासा, चंग के साथ गुलाल उड़ाते हुए भक्त रथ के आगे नाचते गाते आयेंगे।

गौरतलब है कि बाबा श्याम फाल्गुन शुक्ल पक्ष की एकादशी को ही अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए आते हैं। इस दौरान भक्तों में रथ की छूने की लालसा, खजाने के रूप में प्रसाद लेने की अभिलाषा के साथ श्याम भक्त रथ के साथ चलते हैं। रथ बाबा श्याम के दरबार से रवाना होकर मिश्रा मोहल्ले से सुनारों के मोहल्ले से खातियों के मोहल्ले से होते हुए अस्पताल चौराहा से पूराने बस स्टैंड से सीधे मुख्य बाजार आएगा।

कुत्तों ने नवजात को नोचा, तीन कार्मिक निलंबित करने से नर्सेज एसोसिएशन में रोष

जालोर, (का.सं.)। सिरोही जिला मुख्यालय पर स्थित राजकीय चिकित्सालय से सोमवार देर रात 29 दिन के मासूम नवजात को कुत्तों द्वारा उठा ले जाकर नोंचने से मासूम की मौत के बाद मंगलवार को उक्त घटना के बाद तीन कार्मिकों निलंबित करने के बाद बुधवार को नर्सेज एसोसिएशन ने पी.एम.ओ. कार्यालय का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया।

- **नर्सेज एसोसिएशन ने पी.एम.ओ. कार्यालय का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया**
- **नर्सेज एसोसिएशन ने बताया कि इस लापरवाही के लिए जिम्मेदार बड़े अधिकारियों के खिलाफ कारवाई की जाये**

सिरोही के सरकारी अस्पताल से 29 दिन के नवजात को कुत्ते ने नोंच नोंच कर मार डाला था।। कुत्ते अस्पताल में मां के पास सो रहे नवजात को उठा ले गये थे। इस घटना ने सभी का दिल दहला कर रख दिया। घटना के बाद लोगों में आक्रोश देखा गया। सिरोही जिला कलेक्टर ने इस मामले को गंभीर मानते हुए शुरुआती जांच में दोषी पाए गये कार्मिक नर्सिंग आफिसर को निलंबित कर दिया। वहीं वार्ड बाय और गार्ड की सेवा ही खत्म कर दी। इस कार्रवाई का बुधवार को राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन ने विरोध प्रकट किया तथा पीएमओ कार्यालय का घेराव किया। वहीं ज्ञापन देकर तीनों को बहाल करने की मांग की। तीनों कार्मिकों को बहाल नहीं किया तो गुरूवार से कार्य बहिष्कार करने की चेतावनी दी।

नर्सेज एसोसिएशन ने बताया कि इस लापरवाही के लिए जिम्मेदार बडे अधिकारियों के खिलाफ कारवाई की जाये। छोटे कर्मचारी पर कार्रवाई करना सही नहीं है। वही जिला कलेक्टर ने कहा कि दोषी को नहीं बख्शा जायेगा। इस मामले की जांच रिपोर्ट आने पर अन्य दोषीयों के खिलाफ भी कार्रवाई की जायेगी

राशिफल गुरूवार 2 मार्च, 2023

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, आर्द्रा नक्षत्र दिन 12:43 तक, आयुष्मान योग सांय 5:10 तक, वणिज करण सांय 7:56 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-कुम्भ, गुरू-मीन, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग दिन 12:43 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:43 से आरम्भ होगा। भद्रा सांय 7:56 से शुक्रवार प्रातः 9:12 तक है। आज आमला एकादशी व्रत स्मार्तों का है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:20 तक, चर 11:13 से 12:39 तक, लाभ-अमृत 12:39 से 3:31 तक, शुभ 4:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:54, सूर्यास्त 6:24

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में सार्थक सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।